B. Com. Part I
Fin. Accoun.
Date 06/05/20

Dr. Parmanand ...
Dept. of Commerce
B.M. College, Rahika

Dissolution of Partnership Firm-I

भागशः वितरण (Piecemeal Distribution)

(i) लाभ विभाजन अनुपात में पूंजी समायोजित विधि (Capital Adjustment Method in Profit sharing Ratio or Proportionate Capital Method)

अभी हमने अध्ययन किया है कि साझेदारी के विघटन की दशा में संपत्ति से धीरे-धीरे धन वसूल होता है एवं जैसे-जैसे धन वसूल होता है वैसे-वैसे दायित्वों का भुगतान किया जाता है इस संबंध में ध्यान देने रखने कि बातें है की जबतक सभी संपत्तियों से धन वसूल नहीं हो जाता है तब-तक Realisation Account नहीं बना सकते और जबतक Realisation Account नहीं बनेगा तबतक लाभ अथवा हानि की जानकारी नहीं प्राप्त होगी और जबतक लाभ अथवा हानि की जानकारी नहीं होगी तबतक साझेदारों को पूंजी का भुगतान नहीं किया जा सकता, इस संबंध में निम्नलिखित

Page No.

र दो दशाओं को समझना आवश्यक होता है:-

पूंजी
2. ~~लाभालाभ~~ अनुपात में नहीं लौटाना चाहिए - यदि पूंजी अनुपात और लाभालाभ अनुपात एकसमान नहीं हो तो ऐसी दशा में संपत्ति से ~~ब~~ प्राप्त धन को साझेदारों के बीच उनके पूंजी अनुपात में यदि बाँटा जाता है तो बाँटने के बाद जो हानि या लाभ आता है वह लाभ-विभाजन अनुपात में नहीं होगा।

इसे हम निम्नलिखित उदाहरण द्वारा स्पष्ट समझ सकते हैं मान लिया कि एक साझेदारी के समापन पर सभी दायित्वों के भुगतान के पश्चात ₹60,000 एवं ₹30,000 प्राप्त होते हैं साझेदारों का पूंजी क्रमशः ₹2,00,000 एवं ₹1,00,000 है तथा लाभ-विभाजन अनुपात बराबर-बराबर है तो ऐसी दशा में निम्न प्रकार से इसकी गणना कर लाभ-हानि की जानकारी प्राप्त करेंगे

Statement showing Distribution of Cash

Particulars	Partners	
	A	B
	₹	₹
Capital Balance	2,00,000	1,00,000
Less: First Instalment (₹60,000) distributed in 2:1 capital ratio	40,000	20,000
Balance	1,60,000	80,000
Less: Second Instalment (₹30,000) distributed in 2:1 capital ratio.	20,000	10,000
loss on realisation	1,40,000	70,000

उपरोक्त के आधार पर हम पाते हैं कि साझेदारों का जो हानि है वह लाभ विभाजन अनुपात में नही है अर्थात किसी साझेदार का कम है तो किसी की अधिक हानि हो रही है। इस आधार पर हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि पूंजी अनुपात मे साझेदारों के बीच धन का वितरण न्यायोचित

नहीं है।

b: लाभालाभ अनुपात में नहीं लौटाना चाहिए - यदि पूंजी अनुपात एवं लाभालाभ अनुपात समान नहीं हो और बाह्य दायित्व तथा साझेदारों का ऋण के भुगतान के पश्चात यदि धन शेष बचती है तो इसे साझेदारों के बीच लाभ-विभाजन अनुपात में यदि बाँटा जाता है तो ऐसी दशा में धन बाँटने के पश्चात जो लाभ अथवा हानि होगी वह लाभ-विभाजन अनुपात में नहीं होगा,

इसे हम प्रथम A की दशा में जो उदाहरण दिया गया है उसी के आधार पर समझ सकते हैं, मान लिया कि एक साझेदारी के समापन पर सभी दायित्वों के भुगतान के पश्चात ₹60,000 एवं ₹30,000 प्राप्त होते हैं साझेदारों का पूंजी क्रमशः ₹2,00,000 एवं ₹1,00,000 है तथा लाभ-विभाजन अनुपात बराबर-बराबर है तो ऐसी दशा में निम्न प्रकार से इसकी गणना कर लाभ हानि की जानकारी प्राप्त करेंगे

Statement showing Distribution of Cash

Date ___/___/_____

Particulars	Partners	
	A	B
	₹	₹
Capital Balance	2,00,000	1,00,000
Less: First Instalment (₹60,000) distributed in 1:1 profit sharing ratio	30,000	30,000
Balance	1,70,000	70,000
Less: Second Instalment (₹30,000) distributed in 1:1 profit sharing ratio	15,000	15,000
Loss on realisation	1,55,000	55,000

उपरोक्त के आधार पर हम पाते हैं कि साझेदारों का जो हानि है वह लाभ विभाजन अनुपात में नहीं है अर्थात किसी साझेदार का कम तो किसी का अधिक हानि हो रहा है। इस आधार पर हम निष्कर्ष के रूप

Scanned with CamScanner

Saathi
Date ___ / ___ / ___

में साझेदारों कह सकते हैं कि
लाभालाभ अनुपात में साझेदारों
के बीच धन का वितरण न्यायोचित
नहीं है।

Scanned with CamScanner